विचार बिन्दु

पर-स्त्री, पर-धन, पर-निंदा, परिहास और बड़ों के सामने चंचलता का त्याग करना चाहिए। –संस्कृत सूक्ति

वनों की प्रतिरोधक क्षमता के लिए प्राकृतिक जलवायु समाधान अपरिहार्य है

वन प्रतिरोधक क्षमता का तात्पर्य है कि वन किस हद तक प्राकृतिक आपदाओं, जलवायु परिवर्तन और मानव गतिविधियों के प्रभावों से उबर सकते हैं। यह क्षमता उन वनों को परिभाषित करती है जो संकटों का सामना कर पुन: अपनी पारिस्थितिकीय स्थिति को बनाए रखते हैं। प्रतिरोधक क्षमता का आकलन करने के लिए विभिन्न मानदंडों का उपयोग किया जाता है जैसे जैव विविधता, वनस्पति संरचना और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं। प्रतिरोधक क्षमता वाले उष्णकटिबंधीय वन वे हैं जो प्राकृतिक आपदाओं जैसे तूफान, सूखा, आग आदि के बाद भी तेजी से पुन: स्थिर हो जाते हैं। इसके उदाहरण के रूप में अमेज़न वर्षावन को देखा जा सकता है जो कई दशकों से कई प्रकार के संकटों का सामना करते हुए भी अपने जैव विविधता को बनाए रखने में सक्षम रहे हैं। इन वनों की पहचान करने के लिए वैज्ञानिक विभिन्न संकेतकों का उपयोग करते हैं जैसे वनस्पति का घनत्व, प्रजातियों की विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र की कार्यक्षमता।

वन प्रतिरोधक क्षमता का महत्व कई कारणों से है। सबसे पहले, यह वन संरक्षण में सहायक होती है। प्रतिरोधक वनों का संरक्षण करने से अन्य वनों की तुलना में इनकी जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बनाए रखना आसान होता है। वन बहाली में भी यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि प्रतिरोधक वनों को बहाल करने के लिए कम संसाधनों की आवश्यकता होती है और यह तेजी से पुन: स्थिर हो जाते हैं। प्रतिरोधक वनों का महत्व कई पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के लिए भी होता है। ये वन जल चक्र को संतुलित रखते हैं, मिट्टी के क्षरण को रोकते हैं और स्थानीय जलवायु को नियंत्रित करते हैं। इसके साथ ही, प्रतिरोधक वनों में फूलों और जीवों की विविधता अधिक होती है, जिससे जैव विविधता को संरक्षित करने में मदद मिलती है। कार्बन अवशोषण में भी प्रतिरोधक वनों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। ये वन अधिक कार्बन को अवशोषित कर वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को कम करते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार, प्रतिरोधक वनों का संरक्षण और बहाली जलवायु समाधान के रूप में महत्वपूर्ण है।

स्थिरता की दृष्टि से भी प्रतिरोधक वन महत्वपूर्ण होते हैं। ये वन न केवल पर्यावरण को संरक्षित करते हैं बल्कि स्थानीय समुदायों की आजीविका को भी समर्थन प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, दक्षिण-पूर्व एशिया के वन स्थानीय समुदायों को खाद्य, जल और औषधीय पौधों की आपूर्ति करते हैं। इसके अलावा, पर्यटन के माध्यम से भी स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के कई तरीके हैं। सबसे पहले, जैव विविधता को बनाए रखना आवश्यक है। विभिन्न प्रजातियों की उपस्थिति वन को विभिन्न संकटों से उबरने में सक्षम बनाती है। दूसरा तरीका है वनस्पति संरचना को बनाए रखना, जिससे वन की स्थिरता बढ़ती है। स्थानीय समुदायों की भागीदारी भी महत्वपूर्ण होती है। वे वन संरक्षण और बहाली में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

वनों और वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बचाना एक प्राकृतिक जलवायु समाधान है। ये वन जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने, जैव विविधता को बनाए रखने और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को बनाए रखने में मदद करते हैं। इसके अलावा, ये स्थानीय समुदायों की आजीविका को भी समर्थन प्रदान करते हैं। इसलिए, इन वनों का संरक्षण और बहाली अत्यंत महत्वपूर्ण है। उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। वैज्ञानिकों, स्थानीय समुदायों और सरकारों को मिलकर काम करना होगा। वन संरक्षण और बहाली के लिए नीतियों का निर्माण और उनका कार्यान्वयन आवश्यक है। इसके साथ ही, पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता भी महत्वपूर्ण है, जिससे लोग वनों के महत्व को समझ सकें और उनके संरक्षण में भाग ले सकें। इस प्रकार, हम एक स्थायी और संतुलित पर्यावरण की ओर बढ़ सकते हैं, जिसमें वनों का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

वन प्रतिरोधक क्षमता, जिसे पारिस्थितिक प्रतिरोधक क्षमता के रूप में भी समझा जाता है, वन पारिस्थितिक तंत्र की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। यह वन पारिस्थितिकी तंत्र की उस क्षमता को दर्शाती है जो उसे प्राकृतिक और मानवजनित खतरों से उबरने में सक्षम बनाती है। जैसा कि पहले कहा गया है, इसमें तूफान, सूखा, आग, कीट संक्रमण और जलवायु परिवर्तन शामिल हैं। प्रतिरोधक क्षमता के बिना, वन पारिस्थितिकी तंत्र इन खतरों के सामने अस्थिर हो सकते हैं और अपनी पारिस्थितिकीय कार्यक्षमताओं को खो सकते हैं। उदाहरण के लिए, अमेज़न के वर्षावन जो कि विश्व के सबसे बड़े उष्णकटिबंधीय वनों में से एक है, ने कई प्राकृतिक और मानवजनित खतरों का सामना किया है। इसके बावजूद,अपनी जैव विविधता को संरक्षित रखा है और यही इसकी उच्च प्रतिरोधक क्षमता का संकेत है।

> **कार्बन अवशोषण की दृष्टि से, प्रतिरोधक वन जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये वन अधिक मात्रा में कार्बन को अवशोषित करते हैं और इसे दीर्घकालिक रूप से संग्रहीत करते हैं। यह कार्बन अवशोषण प्रक्रिया वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को कम करने में मदद करती है, जिससे ग्रीनहाउस गैसों का प्रभाव कम होता है।**

प्रतिरोधक क्षमता का आकलन करने के लिए विभिन्न वैज्ञानिक मानदंडों का उपयोग किया जाता है। इनमें जैव विविधता, वनस्पति संरचना, और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं शामिल हैं। जैव विविधता प्रतिरोधक क्षमता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है क्योंकि विविध प्रजातियों की उपस्थिति वन को विभिन्न संकटों से उबरने में सक्षम बनाती है। वनस्पति संरचना भी महत्वपूर्ण है क्योंकि एक सुसंगठित वन संरचना पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता और कार्यक्षमता को बनाए रखने में मदद करती है। उदाहरण के लिए, एक अध्ययन ने दिखाया कि उच्च जैव विविधता वाले वन सूखा के प्रभावों से तेजी से उबरते हैं।

प्रतिरोधक वनों का संरक्षण वन पारिस्थितिकी तंत्र के स्थायित्व को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है। यह संरक्षण न केवल जैव विविधता को बनाए रखता है बल्कि पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को भी बनाए रखता है जो मानव जीवन के लिए आवश्यक हैं। वन बहाली के संदर्भ में, प्रतिरोधक वनों को बहाल करने के लिए कम संसाधनों की आवश्यकता होती है और ये तेजी से पुन: स्थिर हो जाते हैं। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है जब हम जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने की बात करते हैं। एक उदाहरण के रूप में, मध्य अमेरिका के कुछ क्षेत्रों में वन बहाली परियोजनाओं ने दिखाया है कि उच्च प्रतिरोधकता वाले वन तेजी से पुन: स्थिर हो जाते हैं और अधिक कार्बन का अवशोषण करते हैं।

कार्बन अवशोषण की दृष्टि से, प्रतिरोधक वन जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये वन अधिक मात्रा में कार्बन को अवशोषित करते हैं और इसे दीर्घकालिक रूप से संग्रहीत करते हैं। यह कार्बन अवशोषण प्रक्रिया वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को कम करने में मदद करती है, जिससे ग्रीनहाउस गैसों का प्रभाव कम होता है। एक अध्ययन के अनुसार, उष्णकटिबंधीय वनों में कार्बन संग्रहण की क्षमता उच्च होती है, विशेषकर जब वे उच्च जैव विविधता वाले होते हैं। इस प्रकार, प्रतिरोधक वनों का संरक्षण और बहाली जलवायु परिवर्तन को कम करने में एक महत्वपूर्ण रणनीति है।

स्थानीय समुदायों की आजीविका के संदर्भ में भी प्रतिरोधक वनों का महत्व अनदेखा नहीं किया जा सकता है। ये वन स्थानीय समुदायों को खाद्य, जल, और औषधीय पौधों की आपूर्ति करते हैं। उदाहरण के लिए, दक्षिण-पूर्व एशिया के वनों में रहने वाले समुदाय अपनी आजीविका के लिए वनों पर निर्भर होते हैं। इसके अलावा, पर्यटन भी इन वनों से जुड़ा हुआ है, जो स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है। प्रतिरोधक वनों का संरक्षण स्थानीय समुदायों को स्थायी आर्थिक लाभ प्रदान कर सकता है।

उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के कई तरीके हैं। सबसे पहले, जैव विविधता को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। विभिन्न प्रजातियों की उपस्थिति वन को विभिन्न संकटों से उबरने में सक्षम बनाती है। दूसरा तरीका है वनस्पति संरचना को बनाए रखना, जिससे वन की स्थिरता बढ़ती है। तीसरा तरीका है स्थानीय समुदायों की भागीदारी को बढ़ावा देना। स्थानीय समुदाय वन संरक्षण और बहाली में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके लिए शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम चलाना महत्वपूर्ण है ताकि लोग वनों के महत्व को समझ सकें और उनके संरक्षण में सक्रिय भाग ले सकें।

अंत में, उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। वैज्ञानिकों, स्थानीय समुदायों और सरकारों को मिलकर काम करना होगा। वन संरक्षण और बहाली के लिए नीतियों का निर्माण और उनका कार्यान्वयन आवश्यक है। इसके साथ ही, पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता भी महत्वपूर्ण है, जिससे लोग वनों के महत्व को समझ सकें और उनके संरक्षण में भाग ले सकें। इस प्रकार, हम एक स्थायी और संतुलित पर्यावरण की ओर बढ़ सकते हैं, जिसमें वनों का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

वन प्रतिरोधक क्षमता एक महत्वपूर्ण अवधारणा है जो वन पारिस्थितिक तंत्र की दीर्घकालिक स्थिरता और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। प्रतिरोधक क्षमता का महत्व न केवल पर्यावरणीय दृष्टिकोण से बल्कि आर्थिक और सामाजिक दृष्टिकोण से भी है। जैव विविधता, वनस्पति संरचना और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाएं प्रतिरोधक क्षमता के मुख्य घटक हैं। उष्णकटिबंधीय वनों का संरक्षण और बहाली जलवायु परिवर्तन को कम करने, जैव विविधता को बनाए रखने और स्थानीय समुदायों की आजीविका को समर्थन प्रदान करने में महत्वपूर्ण है। सामूहिक प्रयासों और नीतियों के माध्यम से हम उष्णकटिबंधीय वनों की प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकते हैं और एक स्थायी भविष्य की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

वन प्रतिरोधक क्षमता उष्णकटिबंधीय वन पारिस्थितिक तंत्र में विनाशकारी परिवर्तनों से बचाव कर सकती है। परिवर्तन सामान्य है, लेकिन यह अचानक और कठोर विपरीत स्थिति में परिवर्तित हो सकता है। हालांकि विभिन्न घटनाएँ ऐसे परिवर्तनों को उत्प्रेरित कर सकती हैं, अध्ययन बताते हैं कि प्रतिरोधक क्षमता की हानि आमतौर पर वैकल्पिक स्थिति की ओर ले जाती है। इसका मतलब है कि ऐसे पारिस्थितिक तंत्रों के सतत प्रबंधन की रणनीतियों को प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने पर केंद्रित होना चाहिए। प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ावा देना न केवल पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता और जैव विविधता को बनाए रखेगा, बल्कि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने और स्थानीय समुदायों की आजीविका को सुरक्षित रखने में भी मदद करेगा।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)

(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

दूरदर्शी नेतृत्व का गांवों को जल आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में ठोस कदम

मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान 2.0

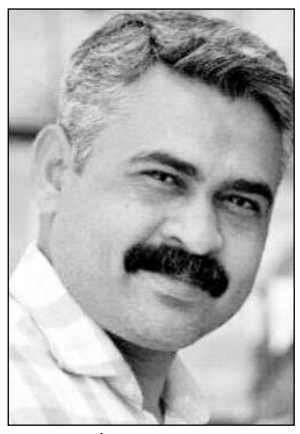

गौरीकांत शर्मा

मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा ने प्रदेश की बागडोर सम्भालते ही राज्यहित में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए जिनमें मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान 2.0 प्रारम्भ करना विशेष रूप से उल्लेखनीय है। गांवों को जल आत्मनिर्भर बनाते हुए राजस्थान प्रदेश को जल स्थाई राज्य बनाना इस अभियान का मूल उद्देश्य है, जिसे विभिन्न विभागों के समन्वय से हासिल के जाने का लक्ष्य है। इस अभियान के क्रियान्वयन से ग्रामीण इलाकों में न केवल पेयजल बल्कि सिंचाई एवं अन्य कार्यों के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध हो सकेगा। इससे ग्रामीण जनता स्वास्थ्य पर अनुकूल प्रभाव होने से सशक्त व आत्मनिर्भर बनेगी, जिससे उसके जीवन स्तर में सुधार आएगा।

अभियान के प्रथम चरण के तहत ग्रामीण इलाकों में विभिन्न क्रियाकलापों के माध्यम से प्रभावी जल संरक्षण के कार्य किए जा रहे हैं। वहीं दूरदर्शी सोच के साथ द्वितीय चरण में गांवों के चयन के लिए अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दी है। प्रदेश के जलग्रहण विकास एवं भू-संरक्षण विभाग के निदेशालय के निर्देश पर इस दिशा में कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। उदयपुर जिला कलेक्टर अरविंद पोसवाल ने संबंधित विभागों, विकास अधिकारियों व तहसीलदारों को पत्र लिखकर ब्लॉकवार एवं गांव वार सूचना मांगी है।

जलग्रहण विभाग के अधीक्षण अभियंता अतुल जैन ने बताया कि ऐसे गांव जहां पहले से कोई वॉटर शेड परियोजना स्वीकृत हो, वह गांव जहां पीने का योग्य पानी उपलब्ध नहीं है या फ्लोराइड की मात्रा अधिक है, जिन गांवों में गत 5 वर्षों के दौरान टैंकरों से पेयजल आपूर्ति की है, वह गांव जिनमें पिछले 5 वर्षों के दौरान अकाल घोषित किया गया हो, वह गांव जहां 70 प्रतिशत कृषि भूमि वर्षा पर निर्भर करती है, जनप्रतिनिधियों व अन्य योजनाओं के तहत चयनित आदर्श गांव, वे गांव जो वन विभाग के क्लस्टर के अंतर्गत आते हैं अथवा अभियान के तहत योगदान देने के इच्छुक गांवों का दूसरे चरण के लिए प्राथमिकता के साथ चयन किया जाएगा।

अभियान के दौरान इस प्रकार के कार्य किए जाते हैं जिससे भूमिगत जल स्तर में सुधार हो, सतह पर पानी की उपलब्धता बढ़े एवं कृषि संबंधी कार्यों में सुधार के साथ-साथ उत्पादन बढ़े। विशेषकर जल संरक्षण, चारागाह विकास, वृक्षारोपण, फसल व उद्यानिकी की उन्नत विधि जैसे ड्रीप, सोलर पंप आदि को बढ़ावा देकर व्यावसायिक व आधुनिक खेती को प्रोत्साहित किया जाता है। जलग्रहण क्षेत्र उपचार के कार्यों जैसे डीप कन्टीन्यूअस कन्टूर ट्रेन्चेज (सीसीटी), स्ट्रेगर्ड ट्रेन्चेज, फार्म पोण्ड्स, मिनी परलोकेशन टेंक (एमपीटी), संकन गली पिट (एसजीपीटी), खड़ीन, जोहड़, टांका निर्माण, गैबियन, कम्पार्टमेन्ट, कन्टूर, फील्ड बंड, छोटे एनिकट, मिट्टी के चैक डेम, जलग्रहण ढ ांचा, नाला स्थिरीकरण, पैरीफेरल बंड कार्य किए जाते हैं। लघु सिंचाई योजना के कार्य जैसे माइनर इरीगेशन टेंक की मरम्मत, नवीनीकरण, सुदृढ़ीकरण कार्य एवं जल स्त्रोतों व संरचनाओं को नालों से जोड़ना आदि कार्यों के साथ ही जल संग्रहण ढांचों की क्षमता बढ़ाने के लिए मरम्मत एवं पुनर्रोद्धार करना, नालों से मिट्टी निकाल कर गहरा व चौड़ा करना, पेयजल स्त्रोतों का सुदृढ़ीकरण, कृत्रिम भूजल पुनर्भरण संरचनाओं का पुनर्जलभरण कार्य भी इनमें शामिल हैं।

उदयपुर के लिए प्रथम चरण में 295 करोड़ के 15232 कार्यों की डीपीआर : जिला कलेक्टर अरविंद पोसवाल के अनुसार उदयपुर जिले में मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान 2.0 के प्रथम चरण के तहत 151 ग्राम पंचायतों के 350 गांवों में 295.36 करोड़ के 15232 कार्यों की डीपीआर तैयार की गई। इनमें से स्वीकृत 2996 कार्यों में से 1654 पूर्ण कर लिए गए हैं और 1342 प्रगतिरत हैं। प्रथम चरण की डीपीआर के कार्य 30 जून 2025 तक पूर्ण करने का लक्ष्य है। अभियान में कृषि, उद्यानिकी, वन, भू-जल, पंचायती राज एवं ग्रामीण विकास, जनस्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी, जल संसाधन तथा जल ग्रहण विभाग के माध्यम से कार्य किए जा रहे हैं। यह कार्य विभागीय मद, मनरेगा मद एवं राज्य मद से प्राप्त राशि से करवाए जा रहे हैं।

गौरीकांत शर्मा,
उपनिदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क, उदयपुर।

सरकारी विद्यालय की जमीन पर भूमाफिया ने कब्जा किया

अतिक्रमण की हुई भूमि की जांच के बाद भी शिक्षा विभाग कोई कार्रवाई अमल में नहीं ला रहा

चूरू, (कासं)। जिला मुख्यालय पर प्रशासन की लापरवाही के कारण व शिकायत होने के बाद भी लंबे समय से भूमाफिया ने राजकीय विद्यालय की जमीन पर कब्जा कर रखा है। शिकायत होने के बाद भी शिक्षा विभाग कोई कार्रवाई अमल में नहीं ला रहा है।

जानकारी के अनुसार जन जागरूकता सेवा संस्थान के फरियाद खां ने वर्ष 2023 में जिला कलेक्टर के यहां पूनिया कॉलोनी में स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय को खेल मैदान के लिए दी गई भूमि पर

> **आज तक कोई कार्रवाई नहीं होने से सरकारी विद्यालय की भूमि अतिक्रमण से मुक्त नहीं हो सकी है**

अतिक्रमण को लेकर शिकायत की थी, जिस पर जिला कलेक्टर ने उक्त प्रकरण की शिक्षा विभाग को जांच करवाने के निर्देश दिए थे, जिस पर जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय प्राथमिक ने जांच करने के लिए शिक्षकों का एक पैनल बनाया था जिसे रिपोर्ट पेश करनी थी। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार उक्त कमेटी ने जांच कर रिपोर्ट कार्यालय में भी दे दी बताई गयी, लेकिन उच्च अधिकारियों की मिलीभगत से भूमाफियाओं व अतिक्रमण करने वालों पर अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है। सूत्रों के अनुसार जांच रिपोर्ट में जांचकर्ताओं ने पाया कि कुल भूमि के हिस्से में सरकारी विभाग व भूमाफियाओं ने अतिक्रमण कर रखा है। शिकायत करने वाले फरियाद खां ने बताया कि सरकार ने कुल तीन बीघा भूमि आवंटित की थी। सूत्रों के अनुसार जांच रिपोर्ट में आया है कि विद्यालय की कुल भूमि का नाप जब किया गया तब कुल आवंटित भूमि से कम भूमि होना पाया गया। साथ ही आवंटित भूमि पर अतिक्रमण भी मिला, जिनमें अतिक्रमण करने वालों में पीडब्ल्यूडी, नगर परिषद ने डामर सड़क का निर्माण विद्यालय की भूमि से होकर ही किया है। साथ ही पूर्वी दिशा में उत्तर पूर्वी छोर की ओर विद्युत विभाग ने व दक्षिण पूर्वी छोर पर पीडब्ल्यूडी व भूमाफियाओं ने प्लाटिंग कर कब्जा किया है।

जानकारों ने बताया कि वर्ष 2023 में ही पूर्व दिशा में विद्यालय भूमि में समतलीकरण का रास्ता निर्माण भी जांच के दौरान ही भूमाफियाओं द्वारा करवाया गया था। शिकायतकर्ता के अनुसार जांचकर्ताओं ने पाया कि उक्त भूमि पर भूमाफियाओं व सरकारी विभाग ने अतिक्रमण कर रखा है, जिस पर आज तक कोई कार्रवाही नहीं होने से सरकारी विद्यालय की भूमि अतिक्रमण से मुक्त नहीं हो सकी।

यूरिया का जहरीला पानी पीने से 15 बकरियां मरी

बीकानेर, (निसं)। जिले के महाजन कस्बे के पास नेशनल हाइवे पर यूरिया का जहरीला पानी पीने से 15 बकरियों की मौत हो गई। वहीं 10 की हालत गंभीर बनी हुई है। बकरियां यहां चरते हुए एक यूरिया के पानी से भरे टैंक में पहुंची थी। महाजन के ग्रामीण हनुमान जस्सु ने बताया कि नेशनल हाइवे पर अर्जुनसर से महाजन की तरफ करीब तीन किलोमीटर पर एक सर्विस सेंटर बना हुआ है। जहां पर ट्रकों में यूरिया डालने का काम भी चलता है।

इस दौरान ट्रकों से पुरानी यूरिया खुले मेदान में खाली कर दी जाती है इसके अलावा यूरिया की स्टोरेज के बड़े बड़े टैंक भी लीक होते रहते हैं। जिसके चलते सर्विस सेन्टर के आगे यूरिया का पानी भरा रहता है। जस्सु ने बताया कि शुक्रवार को अर्जुनसर निवासी मुलतान भाट और उसके परिवार की करीब 100 बकरियां मंगलाराम भाट चरा रहा था। दोपहर में बकरियां चरते-चरते सर्विस सेन्टर के पास पहुंच गई जहां पर यूरिया का जहरीला पानी पी लिया। जिसमें 15 बकरियों की मौके पर ही मौत हो गई। मंगलाराम ने मुलतान को सूचना दी। सूचना पाकर मुलतान भाट अपने परिवार के साथ मौके पर पहुंचा। जहां

> **नेशनल हाइवे पर अर्जुनसर से महाजन की तरफ करीब तीन किलोमीटर पर एक सर्विस सेंटर बना हुआ है। जहां पर ट्रकों में यूरिया डालने का काम भी चलता है**

देखा कि 15 बकरिया यूरिया का जहरीला पानी पीने से मर चुकी है। जिसको लेकर महाजन पुलिस को सूचना दी गई। सूचना मिलने के बाद पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। इस दौरान पशु चिकित्सक को भी बुलाया गया। ग्रामीणों ने सर्विस सेन्टर के मैनेजर से मुआवजे की मांग की। एक बार तो वह आनाकानी करने लगा मगर बाद में ग्रामीणो के साथ सर्विस सेन्टर के मैनेजेर अनिल कुमार के साथ वार्ता हुई जिसमें मृत 15 बकरियों का मुआवजा के रुप में 5 हजार रुपये प्रति बकरी के हिसाब से 75 हजार रुपये का मुआवजा देना तय किया गया।

पिता की बहुआयामी भूमिका को दर्शाती फादर्स डे स्पेशल फिल्म " पापा हैं ना"

जयपुर। पिता हमेशा अपने बच्चों के जीवन में प्रेरणा के निरंतर स्त्रोत होते हैं। जीवन की चुनौतियों से निपटने के उनके समझदारी भरे तरीके बेजोड़ होते हैं और हर बच्चा अपने पिता की सलाह के लिए आभारी होता है। इस फादर्स डे पर, एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस, बच्चे के जीवन में पिता की बहुआयामी भूमिका को 'लाइफ मित्र'- दोस्त, मार्गदर्शक और वित्तीय अभिभावक के रूप में सम्मानित कर रहा है। एसबीआई लाइफ की डिजिटल फिल्म में इसे खूबसूरती से दर्शाया गया है, जिसे कंपनी की प्रमुख डिजिटल प्रॉपर्टी "पापा हैं ना" के तहत जारी किया गया है। यह फिल्म, पिता के व्यावहारिक और अंतर्दृष्टि भरे पक्ष को उजागर करती है, जो जीवन की चुनौतियों से निपटने के लिए अपने अनुभवों का उपयोग करते हैं।

यह डिजिटल फिल्म, एसबीआई लाइफ के ब्रांड के मूल विचार को प्रदर्शित करती है और इसमें पेशेवर तथा लालन-पालन करने वाले व्यक्ति के तौर पर पिता की दोहरी भूमिका को उजागर किया गया है। लाइफ मित्र (जीवन बीमा सलाहकार) को पिता के रूप में चित्रित कर बेटे को संकट के क्षण में मार्गदर्शन करते हुए दिखाकर, इस डिजिटल फिल्म का उद्देश्य यह पेश करना है कि बीमा सलाहकार पेशेवर और व्यक्तिगत दोनों चुनौतियों को समान रूप से संभालने के लिए तैयार होते हैं। एसबीआई लाइफ के ब्रांड, कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन और सीएसआर के प्रमुख, श्री रवींद्र शर्मा ने इस अभियान के बारे में कहा, पिता को पारंपरिक रूप से परिवार की हर तरह से देख-रेख करने वाले के रूप में देखा जाता है, जो अपने प्रियजनों की जरूरतों और इच्छाओं को पूरा करने के लिए अथक प्रयास करते हैं। हालाँकि, पिछले कुछ वर्षों में यह भूमिका काफी तेजी से बढ़ी है। एसबीआई लाइफ की पापा हैं ना डिजिटल फिल्म इस बात का उदाहरण है कि कैसे पिता अपने कौशल का उपयोग, अपने बच्चों के विकास के लिए कर सकते हैं, ठीक वैसे ही जैसे लाइफ मित्र अपने ग्राहकों की जरूरतों को पूरा करने के लिए सहानुभूति और समझदारी के साथ हर तरह मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। दृश्य की शुरुआत चिंटू से होती है, जो क्रिकेट की पोशाक में बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा है। उसके पिता हड़बड़ी में आते हैं। चिंटू उन्हें निराश होकर बताता है कि उसे क्रिकेट टीम में नहीं चुना गया है और उसने खेल छोड़ने का फैसला किया है। पिता उसे सांत्वना देने का प्रयास करते हैं, लेकिन चिंटू ज़िद पर अड़ा रहता है। जब चिंटू टीम में जगह न बना पाने के बारे में अपनी निराशा व्यक्त करता है, तो उसके पिता अपने लाइफ मित्र वाले व्यक्तित्व में बदल जाते हैं और चिंटू को सलाह देने के लिए अपनी पेशेवर विशेषज्ञता का उपयोग करते हैं। वह चिंटू को अपना बिज़नेस कार्ड ऐसे थमाते हैं, जैसे किसी ग्राहक को दे रहे हों। कार्ड लेते हुए, चिंटू देखता है कि उसके पिता फोन उठाने का नाटक कर रहे हैं।

अब लाइफ मित्र की भूमिका में, पिता चिंटू से पूछते हैं कि क्या वह पक्का क्रिकेट छोड़ना चाहता है। चिंटू हामी भरता है और फिर लाइफ मित्र पिता सलाह देते हैं कि अभी छोड़ने का मतलब है क्रिकेट के विभिन्न स्तरों और संभावित रूप से राष्ट्रीय टीम में आगे बढ़ने का मौका खोना। वह बेटे को खेल छोड़ने के व्यापक निहितार्थों को समझने में मदद करते हैं, उसे दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और मजबूती से यह संदेश देते हैं कि असफलता जीवन की यात्रा का अंग है और इसे अपने जीवन के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने से आड़े नहीं आने नहीं देना चाहिए। चिंटू को सोचने का यह नया तरीका पसंद आता है और वह मुस्कुराते हुए अपने पिता को गले लगाने से पहले कहता है, "धन्यवाद, लाइफ मित्र पापा।"

राशिफल रविवार 16 जून, 2024

पंडित अनिल शर्मा

ज्येष्ठ मास, शुक्ल पक्ष, दशमी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2081, हस्त नक्षत्र दिन 11:13 तक, वारियान योग रात्रि 9:02 तक, तैतिल करण दिन 3:58 तक, चन्द्रमा रात्रि 12:35 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-मेष, बुध-मिथुन, गुरू-वृष, शुक्र-मिथुन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 11:13 तक है। आज रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात रहेगा। आज गंगा दशमी है। आज गंगा दशहरा व्रत समाप्त होगा। आज बटुक भैरव जयन्ती और श्री रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस, यात्रा, दर्शन, पूजन है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:19 से 9:02 तक, लाभ-अमृत 9:02 से 12:26 तक, शुभ 2:10 से 3:52 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:36, सूर्यास्त 7:18

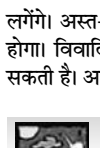

मेष
घर-परिवार में चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

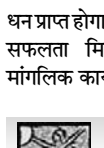

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य के लिए यात्रा संभव है।

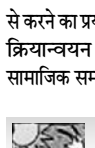

धनु
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कन्या
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मकर
अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।

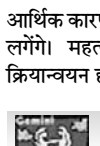

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है।

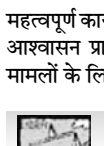

तुला
घर-परिवार के कार्यों के कारण मन में दुविधा बनी रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा। आज समय अनर्गल कार्यों में व्यतीत होगा। मन में असंतोष बना रहेगा।

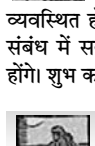

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

कर्क
आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

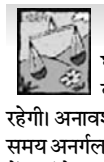

वृश्चिक
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। अतिथियों का आगमन रहेगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है।

मीन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।